सत्यमेव जयते

भारत सरकार
अल्पसंख्यक कार्यों का मंत्रालय

सामाजिक एवं व्यवहार परिवर्तन के लिए पक्ष-समर्थन

राष्ट्रीय जन सहयोग एवं
बाल विकास संस्थान

इस पत्रिका में निम्नलिखित विषयों पर जानकारी दी गई है:

- सामुदायिक सहभागिता
- सामुदायिक लामबंदी
- सामाजिक एवं व्यवहार परिवर्तन संचार
- पक्ष–समर्थन: एक सिंहावलोकन
- मीडिया की भूमिका

समुदाय का आशय – किसी एक गांव अथवा गांवों के समूह और उनमें रहने वाले परिवारों से है जो पारस्परिक लाभों के दिन प्रतिदिन के लेनदेन में एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं। समुदाय उन लोगों का समूह है जो सामान्य हितों के लिए एक साथ रहते हैं तथा उनके क्षेत्र, संसाधन, प्रशासनिक इकाई, भाषा, धर्म, संस्कृति एवं व्यवसाय एक साझे हैं।

सामुदायिक सहभागिता

लोगों द्वारा अपनी भलाई के लिए किसी ऐसे कार्यक्रम की योजना बनाने, उसका कार्यान्वियन करने एवं निरीक्षण करने के लिए सक्रिय रूप से भाग लेना सामुदायिक सहभागिता है।

सामुदायिक सहभागिता निम्नलिखित में सहायक हैः

- किसी भी सरकारी कार्यक्रम के सुचारू रूप से कार्य करने में।
- कार्यक्रम की सेवाओं के इस्तेमाल और पहुंच को बढ़ाने में।
- किसी कार्यक्रम की सफलता एवं असफलता के लिए जवाबदेही में।
- सरकारी हस्तक्षेप कम करने में।
- कार्यक्रम को अपना समझने में।
- कार्यक्रम के निरन्तर बने रहने में।
- कार्यक्रम की कार्यकुशलता बढ़ाने में।
- सामाजिक स्वीकार्यता एवं निरन्तरता सुनिश्चत करने में।
- कार्यक्रमों एवं सेवाओं के इस्तेमाल में सामुदायिक सहभागिता बढ़ाने में।

- कार्यक्रम का कार्यान्वियन सुधारने में तथा स्थानीय तकनीक एवं जानकारी का प्रयोग करके लागत कम करने में।
- समुदाय, खासकर महिलाओं को सशक्त बनाने एवं उनकी क्षमता का निर्माण करने में।

सामुदायिक सहभागिता को कैसे प्राप्त किया जाए?

समुदाय सहभागिता प्राप्त करने के प्राथमिक कदमों में पहला कदम यह है कि समुदाय की जानकारी एवं इसके कौशल को जानने के साथ–साथ समुदाय और सरकारी कार्यक्रमों के प्रति लोगों के दृष्टिकोण को जाना जाए। समुदाय की जानकारी, इसके कौशल एवं दृष्टिकोण का मूल्यांकन समुदाय बैठकों, माताओं की बैठकों, अलग–अलग व्यक्तियों के साथ बैठकों के द्वारा, समुदाय, युवक मंडलों के साथ बात करके किया जा सकता है। समुदाय की प्रथाओं, रीतियों, परंपराओं को समुदाय के सदस्यों के साथ अनौपाचारिक चर्चा के द्वारा जानना प्रभावपूर्ण होता है।

सामुदायिक सहभागिता प्राप्त करने के लिए कदम

चरण – 1	चरण – 2	चरण – 3	चरण – 4	चरण – 5
सामुदायिक सहभागिता की सांझी समझ विकसित करना	वर्तमान स्थिति का पता लगाना	ऐसे मुद्दों और आवश्यकताओं की पहचान करना जिनके समाधान की जरूरत है	कार्य योजना पर सहमत होना	प्रगति की समीक्षा करना

प्रभावी सक्रिय सामुदायिक सहभागिता के लिए तथ्य

- समुदाय को अच्छे से जानें तथा उनकी समस्याओं और आवश्यकताओं को समझें।
- उनके मौजूदा विश्वासों एवं समुदाय में प्रचलित परम्पराओं के बारे में सूचना एकत्रित करें।
- हमेशा सक्रियता से सुनें।
- समुदाय में नए एवं बहुत भिन्न हस्तक्षेपों को शुरु करने की कोशिश न करें।

- सामुदायिक गतिशीलता का विश्लेषण करें तथा परिस्थिति से सामंजस्य बैठाएं।
- समुदाय को शुरुआत से ही कार्यक्रम में शामिल करें।
- समुदाय के नकारात्मक अनुभवों का आदर करें/को महत्व दें तथा ऐसी भावनाओं को कम करने की कोशिश करें।

किसी भी कार्यक्रम में समुदाय के सदस्यों की भूमिका

किसी भी कार्यक्रम में समुदाय के सदस्यों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है:

समुदाय के सदस्यों की भूमिका

समुदाय के सदस्य	प्रमुख भूमिका
ग्राम पंचायत	• सेवाओं के वितरण एवं पक्ष समर्थन की योजना बनाना एवं उसका संवर्धन करना • निरीक्षण और कार्यान्वयन
किशोरियां	• सेवाओं के वितरण एवं अन्य पक्ष समर्थन तथा बीसीसी/आईईसी सामग्री तैयार करने में सरकारी अधिकारियों की सहायता करना।
महिला मंडल प्रधान	• महिलाओं को कार्यक्रम की गतिविधियों में सहभागिता करने एवं सेवाओं का इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित करना
प्राथमिक विद्यालय शिक्षक	• समुदाय, बच्चों एवं उनके माता–पिता को सहभागिता करने एवं कार्यक्रम की सेवाओं का लाभ लेने के लिए प्रोत्साहित करना।
धार्मिक एवं स्थानीय नेता,	• कार्यक्रम को प्रभावी ढंग से चलाने के लिए समुदाय को कार्यक्रम समर्थक सेवाओं में सहभागिता करने
गैर सरकारी संगठन	• के लिए लामबंद एवं संगठित करना।

समुदाय में सूचना के प्रचार–हेतु मंच

सूचना का प्रचार–प्रसार मौजूदा जानकारी को परिष्कृत करने, कौशल के मौजूदा स्तर को बढ़ाने, समुदाय एवं बड़े पैमाने पर समाज में व्यक्तियों एवं समूहों की जन्मजात क्षमता और प्रतिभा का परिपोषण करने एवं आकार देने पर जोर देता है।

आंगनवाड़ी केन्द्र	पंचायत घर	गांव की चौपाल	प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	स्कूल
सामुदायिक समूह	गैर सरकारी संगठन	ग्राम स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस	बीबीबीपी दिवस	ईसीसीई दिवस
माताओं की बैठकें एवं समुदाय की बैठकें	नुक्कड़ नाटक प्रहसन, नाटक	लोक मीडिया एवं लोक गीतों का प्रयोग	बाल मेला/प्रदर्शनी/खेल समारोह	

सामुदायिक लामबंदी

सामुदायिक लामबंदी वह प्रक्रिया है जिसमें किसी विशेष विकास कार्यक्रम के बारे में जागरूकता बढ़ाने तथा उसकी मांग करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों से समुदाय के सदस्यों को एक साथ लाया अथवा सशक्त बनाया जाता है।

सामुदायिक लामबंदी

- उस क्षमता का निर्माण करती है जिसके माध्यम से व्यक्ति, समूह एवं संगठन अपनी आवश्यकताओं में सुधार के लिए सहभागिता एवं निरन्तर आधार पर गतिविधियों की योजना बनाते हैं, उसे कार्यान्वित करते हैं और उसका मूल्यांकन करते हैं।
- सांझे सरोकारों अथवा आवश्यकताओं पर लोगों के बीच जागरूकता उत्पन्न करती है तथा उन्हें सांझे लाभों को बनाने के लिए कार्रवाई करने में मदद करती है।
- संचार, शिक्षा एवं संगठन को शामिल करती है, जो सामुदायिक कार्य एवं विकास का मार्ग प्रशस्त करते हैं।
- स्थानीय निर्णय लेने में सहभागिता को सुदृढ़ बनाती है।
- सामाजिक एवं उत्पादक सेवाओं तक पहुंच में सुधार करती है।
- स्थानीय तौर पर उपलब्ध संसाधनों के इस्तेमाल की दक्षता को बढ़ाती है।
- परिसंपत्ति के निर्माण में अवसरों को बढ़ाती है।
- बेहतर स्वास्थ्य, शिक्षा, आवास, समग्र संसाधनों एवं समाज कल्याण के माध्यम से जीवन–स्तर में सुधार के उपाय करती है।

सामुदायिक लामबंदी में शामिल प्रमुख कार्य

- समुदाय के सदस्यों के बीच जारी वार्तालाप को विकसित करना।
- सामुदायिक संगठनों (समितियां आदि) का सृजन अथवा सुदृढ़ीकरण।
- एक ऐसे माहौल का सृजन करना जिसमें व्यक्ति अपनी एवं अपने समुदाय की आवश्यकताओं का समाधान करने के लिए खुद को सशक्त बना सके।
- समुदाय के सदस्यों की सहभागिता को बढ़ाना।

सामुदायिक कार्य योजना के चरण

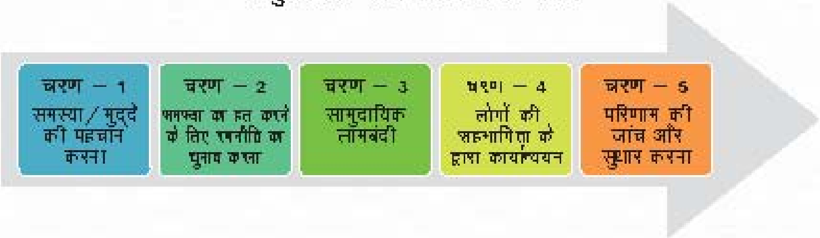

सामुदायिक लामबंदी में पणधारियों की भूमिका

समुदाय के सदस्य / समुदाय के ऐसे नेता जो सामुदायिक सहभागिता एवं लामबंदी को प्राप्त करने में मदद कर सकते हैं की भूमिका निम्न प्रकार है:

पंचायती राज संस्थाओं की भूमिका

- लोक शिक्षा कार्यक्रम के द्वारा जागरूकता एवं लैंगिक संवेदनशीलता को प्रचारित करके महिलाओं एवं बच्चों के प्रति हो रहे अपराधों के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए समुदाय को लामबंद करना।
- ग्राम सभा के साथ नियमित आधार पर सामाजिक मुद्दों पर चर्चा करना।
- स्थानीय विकास कार्यक्रमों एवं गतिविधियों पर लोक सूचना तक मुफ्त पहुंच को सुगम बनाना।

ग्राम सभा की भूमिका

- सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता का सृजन / प्रसार करना।
- समस्या की पहचान के लिए एक सतर्कता समूह के तौर पर समुदाय को शामिल करना तथा ग्राम सभा को सूचना देना।
- लैंगिक समानता जैसे सामाजिक मुद्दों का पक्ष–समर्थन करना और क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग करते हुए समुदाय को शिक्षित करना।
- कार्यक्रमों के निरीक्षण के लिए ग्राम स्तर की समिति का गठन करना।

महिला मंडल के प्रधान की भूमिका

- महिलाओं को सामुदायिक गतिविधियों में भाग लेने तथा चल रहे कार्यक्रमों की सेवाओं का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- लिंग, महिलाओं के प्रति हिंसा, नशाखोरी आदि जैसे प्रमुख मुद्दों पर चर्चा के लिए विशेष महिला सभा बैठकों का आयोजन करना।
- समुदाय की मानसिकता (सार्वजनिक स्थल पर महिलाओं के खिलाफ हिंसा प्रमुख सरोकार हैं) के पीछे के वास्तविक कारणों का पता लगाना तथा यह पता लगाना कि इनका सामना कैसे किया जाए।

धार्मिक एवं स्थानीय नेताओं की भूमिका

- समुदाय आधारित कार्यक्रमों में भाग लेने तथा सरकारी कार्यक्रमों का लाभ लेने के लिए समुदाय को लामबंद एवं संगठित करना।

गैर सरकारी संगठनों की भूमिका

- समुदाय विशिष्ट कार्यक्रमों को प्रभावी ढंग से चलाने के लिए सहायता सेवाएं देना।

सामुदायिक लामबंदी बढ़ावा देने के लिए तकनीकें

सामुदायिक लामबंदी के लिए प्रयोग की जा सकने वाली तकनीके एवं गतिविधियों को निम्न प्रकार रखा जा सकता है:

- **भूमिका अभि**नय एक ऐसा अनुकरण है जिसमें प्रत्येक सहभागी को निभाने के लिए एक भूमिका सौंपी जाती है। सहभागियों को भूमिका, सरोकार, उद्देश्य, जिम्मेदारियों एवं मनोभावों के संबंध में कुछ जानकारी दी जाती है। उसके बाद आमतौर पर सामने आने वाली स्थिति एवं समस्या का सामान्य विवरण दिया जाता है। उदाहरणार्थ, शराबखोरी, दो समूहों के बीच विवाद, विवाद प्रबंधन आदि जैसी स्थितियां हो सकती है। जब एक बार सहभागी अपनी भूमिका को पढ़ लेते हैं तो वे एक – दूसरे से बात करके अपनी भूमिका निभाते हैं।
- **प्रदर्शन** द्वारा समुदाय ज्यादा अच्छे से समझते हैं क्योंकि वे चीजों को स्वयं के लिए देख पाते हैं। यह सैद्धांतिक नहीं है, बल्कि यह व्यावहारिक है, क्योंकि अभ्यास अधिक आत्म–विश्वास देता है। लोग समूह चर्चा में पारस्परिक बातचीत के माध्यम से सीखते हैं क्योंकि उन्हें अपने विचार, मत एवं राय व्यक्त करने का अवसर मिलता है।
- **सामूहिक चर्चा** में चर्चा कराने वाला नेता इस कदर कुशल होना चाहिए कि चर्चा सार्थक एवं रचनात्मक ढंग से आगे बढ़ सके।
- **संकेंद्रित सामूहिक चर्चा (एफजीडी)** का प्रयोग मुद्दों की गहराई से जांच करने, वैकल्पिक मतों का पता लगाने एवं संचार कौशल विकसित करने में किया जा सकता है। संकेंद्रित सामूहिक चर्चा सामाजिक व्यवहारों, मानदंडों, मूल्यों, अवधारणाओं एवं भावनाओं पर गुणवत्तापूर्ण सूचना प्रदान करने में सहायक होती हैं।
- **होम विजिट** महिलाओं एवं बच्चों की स्वास्थ्य समस्याओं की पहचान करने तथा आवश्यक परामर्शी सेवा प्रदान करने में समर्थ बनाती है।
- **नुक्कड़ नाटक** जन संचार की एक तकनीक है जिसका इस्तेमाल जागरूकता फैलाने एवं जानकारी का प्रचार–प्रसार करने के लिए किया जाता है।

सहभागी सीख एवं कार्रवाई (पी एल ए) एक ऐसा तरीका है जिसके माध्यम से समुदाय के बारे में जाना जा सकता है और उसके साथ संलग्न हुआ जा सकता है। इस तरीके का इस्तेमाल जरूरतों को पहचानने, परियोजनाओं और कार्यक्रम की योजना बनाने, उनका निरीक्षण और मूल्यांकन करने के लिए किया जा सकता है। यह तरीका स्थानीय लोगों को उनकी धारणाओं को सांझा करने और प्राथमिकताओं की पहचान करने और स्थानीय परिस्थितियों की उनकी जानकारी से मुद्दों का मूल्यांकन करने में समर्थ बनाता है।

सामान्य तौर पर पीएलए में अधिक इस्तेमाल किए जाने वाले उपकरणों में मानचित्र, समय सीमाएं, ट्रांसेक्ट वॉक, प्रोब्लम ट्री रैंकिंग गतिविधि और सहभागी प्रशिक्षण शामिल हैं।

सामाजिक एवं व्यवहार परिवर्तन संचार

सामुदायिक आवश्यकताओं का आकलन

- सामुदायिक आवश्यकताओं के आकलन का एक मुख्य हिस्सा है स्थानीय लोगों की आवश्यकताओं और संसाधनों के बारे में उनके विचारों पर सूचना प्राप्त करना। समुदाय और स्थानीय निवासियों को सेवाओं की योजना बनाने, उनके वितरण और उनकी समीक्षा करने में शामिल किया जा सकता है। समुदाय से सूचना प्राप्त करने में निम्नलिखित शामिल हैं:
  - ऐसी संगत सूचनाओं का संग्रहण जो कार्यकर्ताओं को समुदाय की आवश्यकताओं के बारे में बताएगी।
  - विभिन्न पारिवारिक सर्वेक्षणों के माध्यम से सूचना का विश्लेषण।
  - कार्रवाई हेतु प्राथमिकताओं का चुनाव करना एवं निर्णय करना।

आवश्यकताओं के आकलन का महत्व

- स्थानीय मुद्दों और आवश्यकताओं की पहचान करना।
- अल्प संसाधनों का प्रभावी एवं न्यायोचित ढंग से इस्तेमाल करना।
- स्थानीय लोगों को उनकी सेवाओं की योजना बनाने में शामिल करना, उनकी सेवाओं को और अधिक लोकतान्त्रिक बनाना।
- यह सुनिश्चित करना कि छिपे हुए अथवा हाशिए के समूहों की आवश्यकताओं की पहचान की जाए और उन्हें पूरा किया जाए।

सामाजिक एवं व्यवहार परिवर्तन संचार (एसबीसीसी)

सामाजिक एवं व्यवहार परिवर्तन संचार एक संवादात्मक, साक्ष्य–आधारित, परामर्शी प्रक्रिया है जो संचार का उपयोग व्यवहार परिवर्तन को बढ़ावा देने और सुविधाजनक बनाने के लिए करती है और इस प्रकार सामाजिक परिवर्तन लाती है।

एसबीसीसी के तहत परिवर्तन के स्तर

एसबीसीसी के घटक

एसबी सीसी	**संचार** लक्षित श्रोता विशिष्ट विभिन्न चैनलों एवं विषयों का प्रयोग करते हुए संचार तथा उनकी आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं का मिलान करना।
	व्यवहार परिवर्तन व्यवहार परिवर्तन में बेहतर परिणाम प्रदान करने के लिए मानवीय व्यवहार में परिवर्तन शामिल है।
	सामाजिक परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन में सामाजिक व्यवहारों तथा सहभागिता एवं कार्य के लिए मानकों में परिवर्तन शामिल है।

एसबीसीसी के सिद्धांत

एसबीसीसी के 10 प्रमुख सिद्धांत हैं जिन्हें एसबीसीसी अभियानों और कार्यक्रमों को तैयार करने एवं कार्यान्वियन करते समय ध्यान में रखा जाना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे प्रभावी और उच्च–स्तर के हैं।

व्यवस्थित दृष्टिकोण	• उपयुक्त योजना की कार्यनीति का प्रयोग करते हुए व्यवस्थित दृष्टिकोण अपनाना।
शोध का उपयोग	• अपना कार्यक्रम चलाने के लिए मान्यताओं के बजाय शोध का उपयोग करना। स्थितिजन्य विश्लेषण करना ताकि समुदाय की आवश्यकताओं की अंतर्दृष्टि प्राप्त की जा सके।
सामाजिक स्थिति	• सामाजिक संदर्भ पर विचार करना तथा संसाधनों का मूल्यांकन करना, दृष्टिकोण का निर्णय लेना और गठबंधन करना।
श्रोताओं पर ध्यान देना	• लक्षित श्रोताओं, उनकी आवश्यकताओं एवं उन तरीकों पर ध्यान केंद्रित करना जिनसे उनकी आवश्यकताओं का समाधान किया जा सकता है।
मॉडल का इस्तेमाल	• निर्णय लेने में के मार्गदर्शन के लिए कॉगनिटिव थ्योरी ऑफ प्लांड बिहेवियर, स्टेजिस ऑफ चेंज मॉडल, सोशल थ्योरि जैसे सामाजिक व्यवहार सिद्धांतों एवं मॉडल का इस्तेमाल करना।
भागीदारों को शामिल करना	• एसबीसीसी की पूरी प्रक्रिया में भागीदारों/पणधारियों तथा समुदायों को शामिल करना। भागीदारों और पणधारियों के साथ कार्य करने से परियोजना की प्रभावकारिता बढ़ती है।

उद्देश्य निर्धारित करना	• वास्तविक उद्देश्य निर्धारित करना और लागत प्रभावशीलता पर विचार करना। एस एम ए आर टी उद्देश्यों को चुनना।
सामग्री का प्रयोग करना	• विभिन्न चरणों में एक दूसरे को सुदृढ़ बना सकने वाली सामग्रियों और गतिविधियों का प्रयोग करना।
रणनीतियों का चुनाव करना	• उन रणनीतियों का चुनाव करना जो प्रेरणादायक (थ्योरी ऑफ ह्यूमन मोटिवेशन) और कार्रवाई–उन्मुख हों।
गुणवत्ता सुनिश्चित करना	• कार्यक्रम के प्रभाव एवं निरन्तरता के लिए हर चरण में इसका निरीक्षण करते, मूल्यांकन करते और पुनर्योजना बनाते हुए गुणवत्ता सुनिश्चित करना।

व्यवहार परिवर्तन के चरण

व्यवहार परिवर्तन एक प्रक्रिया है, न कि एक घटना। जब कोई एक व्यक्ति किसी भी व्यवहार को परिवर्तित करने का प्रयास करता है उसे पांच चरणों से गुजरना पड़ता है: पूर्व–चिंतन, चिंतन, तैयारी, कार्रवाई और परिवर्तन को बनाए रखना (और पुनरावर्तन)।

संचार

➢ संचार एक प्रक्रिया है जो लोगों को दूसरों के साथ बातचीत करने के अवसर प्रदान करती है, इसके बिना जानकारी और अनुभवों को दूसरों के साथ साझा करना कठिन होगा।

➢ विचारों और जानकारी को बोलकर, लिखकर, इशारे करके, छू कर तथा प्रसारित करके साझा किया जा सकता है। संचार मौखिक, गैर–मौखिक अथवा लिखित हो सकता है।

➢ सामाजिक एवं व्यवहार परिवर्तन लाने में प्रभावी संचार एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

संचार प्रक्रिया

संचार की प्रक्रिया में संदेश भेजने वाला, संदेश, चैनल, संदेश पाने वाला तथा फीडबैक शामिल होते हैं।

संचार चक्र

- **संदेश भेजने वाला:** संप्रेषक अथवा भेजने वाला एक व्यक्ति होता है जो संदेश भेजता है। संप्रेषक की मनोवृत्ति और सार्थक प्रतीकों का चयन, इस बात का इसका निर्धारण करते हैं कि संप्रेषक कितना प्रभावी होगा।
- **चैनल:** वह माध्यम जिसके द्वारा सूचना प्रसारित की जाती है, चैनल कहलाता है।
- **संदेश:** जिसे प्रसारित किया जाना है, वह संदेश कहलाता है। संदेश लिखित रूप में, भाषण के रूप में अथवा संकेतों के रूप में हो सकता है।
- **पाने वाला (रिसीवर):** पाने वाला वह व्यक्ति है जो संदेश को प्राप्त करता है, उसे समझता है और उसे एक सार्थक सूचना में बदलता है।
- **फीडबैक:** फीडबैक मौखिक अथवा गैर–मौखिक प्रतिक्रिया अथवा जवाब हो सकता है।

संचार के प्रकार

संचार को निम्न प्रकारों से वर्गीकृत किया जा सकता है:

1. **मौखिक और गैर–मौखिक**

   मौखिक संचार संदेश भेजने की एक प्रक्रिया है। संदेश बोलकर, लिखकर अथवा दृश्य के रूप में हो सकता है। मौखिक संचार के उदाहरणों में लिखित दस्तावेज, पोस्टर, मौखिक संदेश हो सकते हैं।

   गैर–मौखिक संचार संदेश को बिना शब्दों के भेजने की प्रक्रिया है। गैर–मौखिक संचार के उदाहरणों में इशारे, शारीरिक हावभाव चेहरे के हावभाव, आंखों से संपर्क हो सकते हैं।

2. **एक तरफा और दो तरफा संचार**

   एक तरफा संचार में सूचना केवल एक दिशा (भेजने वाले से पाने वाले को) में भेजी जाती है। पाने वाले के पास भेजने वाले को फीडबैक देने का अवसर नहीं होता है।

दो तरफा संचार वह है जिसमें एक व्यक्ति संदेश भेजने वाला होता है, वह एक संदेश दूसरे व्यक्ति को भेजता है। पाने वाला संदेश पाता है, वह संदेश मिलने की सूचना देते हुए फीडबैक संदेश भेजने वाले को देता है।

3. **आंतरिक एवं बाहरी संचार**

आंतरिक संचार विभिन्न स्तरों के लोगों अथवा संगठन के अंदर ही आंतरिक सहभागियों के मध्य सूचना का आदान–प्रदान करने की प्रक्रिया है। उदाहरण अंतरा–वैयक्तिक संचार।

बाहरी संचार किसी संगठन के औपचारिक ढांचे के बाहर समूहों और व्यक्तियों के मध्य सूचना और संदेशों का आदान–प्रदान करना है। उदाहरण अंतर्वैयक्तिक संचार तथा जनसंचार।

सूचना पाने और देने में सुधार करने के कौशल

सूचना पाना	सूचना देना
ध्यान दें तथा ध्यानपूर्वक सुनें।	यह सुनिश्चित करें कि दूसरे सुन रहे हैं।
नोट एवं संकेतक बनाएं।	धीरे से तथा स्पष्टता के साथ बोलें।
प्रश्न पूछें तथा प्राप्त सूचना की संपुष्टि करें।	जहां आवश्यक हो, दृश्य सामग्री का प्रयोग करें।
	श्रोता से दी गई सूचना दोहराने के लिए कहें।
	सार्थक चर्चा को बढ़ावा दें।

संदेश तैयार करना

संदेश वह चीज है जिसका संचार संप्रेषक करना चाहता है। संप्रेषक को प्रभावी संदेश के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता है ताकि वांछित विचार का संचार सुनने वाले/लक्षित श्रोता तक हो सके।

प्रभावी संदेश तैयार करने हेतु टिप्स

- संदेशों को स्पष्ट, सकारात्मक, यकीन दिलाने वाले गैर आलोचनात्मक एवं आकर्षक बनाएं। शब्द–जाल का प्रयोग न करें।
- मुद्दे के इर्द–गिर्द ढांचा तैयार करें, प्रमुख विचार को उजागर करें।
- स्पष्ट तथ्यों एवं नंबरों का रचनात्मकता के साथ प्रयोग करें।
- नकारात्मक के बजाय सकारात्मक शब्दों के प्रयोग पर जोर दें।
- यदि संभव हो, स्थानीय सूचना को शामिल करें ताकि संदेश लोगों के लिए प्रासंगिक हो।
- श्रोताओं को अपने निष्कर्ष निकालने का अवसर दें।
- यदि संभव हो, समाधान पेश करें।

संचार के अवरोधक

प्रभावी संचार के अवरोधक संदेश व उसके आशय को विलंबित और परिवर्तित कर सकते हैं जिसके कारण संचार की प्रक्रिया असफल हो सकती है या ऐसा अर्थ निकाला जा सकता है जो अवांछित हो। ये अवरोधक आंतरिक (मनोवृत्ति, भाषा, मनोवैज्ञानिक अवरोधक) और बाहरी (भौतिक, सांस्कृतिक भिन्नताएं, शब्दों की अस्पष्टता) हो सकते हैं।

प्रभावी संचार

- संचार को तभी प्रभावी माना जाता है जब यह दूसरे व्यक्ति से अपेक्षित जवाब पाने में सफल होता है।
- जब अपेक्षित प्रभाव की प्राप्ति नहीं होती है, तब ऐसे कारणों जैसे संचार अवरोधकों की खोज यह पता लगाने के लिए की जानी चाहिए कि संचार कैसे अप्रभावी रहा है।

संचार के सुदृढ़ीकरण के लिए दिशानिर्देश

- सकारात्मक सोच रखें। ऋणात्मकता संचार में हस्तक्षेप करती है।
- लोगों की समझ की परख करें।
- यह जानें कि वास्तव में क्या संप्रेषित किया जाना है।
- संचार के विकल्पों के साथ प्रयोग करें। जो चीज एक व्यक्ति के लिए कार्य करती है,

दूसरे व्यक्ति के साथ हो सकता है ढंग से कार्य न करे। चैनलों, सुनने की तकनीकों और फीडबैक तकनीकों में विविधता लाएं।

- उपयुक्त शब्दों का प्रयोग करें तथा स्पष्ट बोलें।
- अच्छे से सुनें। भेजने वाले को खुद यह पता लगाना चाहिए कि दूसरे व्यक्ति ने जो उससे कहा है वह उसे समझा भी है या नहीं।
- दूसरे व्यक्ति में सच्चे मन से दिलचस्पी लें।
- प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें। संचार में ऐसे गैर–मौखिक संचार का प्रयोग करें जो उत्साहित करने वाले हों, जैसे कि सिर हिलाना, मुस्कुराना आदि।
- खुद से पूछें: "क्या मैं आवश्यकता से अधिक सूचना दे रहा हूं या उससे कम?"
- गलत संचार को स्वीकार करें तथा इसके नकारात्मक प्रभाव को कम करने के लिए काम करें।
- सोचें – "यह कैसे संभव है कि कोई संदेश का गलत अर्थ निकाल ले?"

विकास के लिए संचार (सी4डी)

- विकास के लिए संचार (सी4डी) को ऐसी दो तरफा प्रक्रिया के रूप में देखा गया है जिसका उपयोग संचार के विभिन्न उपकरणों एवं दृष्टिकोणों का इस्तेमाल करके विचारों और जानकारी को सांझा करने के लिए किया जाता है जो यक्तियों एवं समुदायों को इस कदर सशक्त बनाते हैं कि वे अपने जीवन–स्तर को सुधारने के लिए कार्य कर सकें।
- विकास के लिए संचार में लोगों, उनके विश्वासों एवं मूल्यों, उन सामाजिक एवं सांस्कृतिक मानकों जो उनके जीवन और व्यवहार को आकार देते हैं, को समझना ताकि स्वस्थ व्यवहारों को स्वीकार करने के लिए उनकी मानसिकता को बदलने के लिए काम किया जा सके।
- यह तीन प्रमुख रणनीतियों के माध्यम से संचालित होता है:
    - संसाधनों तथा विकास के लक्ष्यों के लिए राजनीतिक तथा सामाजिक नेतृत्व की प्रतिबद्धता को बढ़ाने का **पक्ष समर्थन** करना।
    - सिविल सोसायटी संगठनों तथा निजी सैक्टर के साथ भागीदारी एवं गठबंधन बनाने के लिए **सामाजिक लामबंदी**।
    - लोगों की जानकारी, रुख और व्यवहार में परिवर्तन के लिए **संचार का कार्यक्रम** बनाना।

विकास के लिए संचार के चरण

समुदाय आधारित आकलन → (उद्देश्य) → रणनीति बनाना → (कार्य योजना) → कार्यान्वयन → (एम ई संकेतक) → निरीक्षण एवं मूल्यांकन (एमई) संकेतक

समुदाय आधारित आकलन:

पहचान / विश्लेषण / परिष्कृत करना:
- श्रोताओं / पणधारियों
- जोखिमों
- अवसरों
- आवश्यकताओं
- समाधानों
- मीडिया / चैनलों
- एमई संकेतकों
- उद्देश्यों

रणनीति बनाना:

चयन एवं डिजाइन
- संचार
- दृष्टिकोणों
- संदेश
- सीखने की प्रणालियां

कार्यान्वयन:

कार्य करना:
- पूर्व परीक्षण करना
- मीडिया निर्माण
- प्रशिक्षण गतिविधियां
- संदेश का प्रचार–प्रसार

मीडिया के माध्यम से पक्ष समथर्न अभियानों का सुदृढ़ीकरण

पक्ष–समर्थनः एक सिंहावलोकन

➢ पक्ष–समर्थन का आशय प्रभावी ढंग से संचार करने, संदेश पहुंचाने, बातचीत करने अथवा किसी पहल, नीति, कार्यक्रम अथवा किसी एक व्यक्ति या समूह की रुचियों, इच्छाओं, आवश्यकताओं तथा अधिकारों पर जोर देने के लिए किसी व्यक्ति अथवा समूह द्वारा किए गए प्रयासों से है।

- वांछनीय कार्रवाई हेतु किसी मुद्दे अथवा कारण के लिए समर्थन तैयार करना।
- यह सुनिश्चित करना कि कार्यक्रमों तथा सेवाओं के लिए आवश्यक संसाधनों का प्रावधान किया गया है।
- नीति–निर्माताओं / सरकारी अधिकारियों को किसी विशेष कार्यक्रम के दृष्टिकोणों तथा सेवाओं को प्राथमिकता देने के लिए मनाना।
- आम जनता एवं राय देने वाले नेताओं को किसी विशेष मुद्दे अथवा समस्या के बारे में बताना तथा उन्हें उन लोगों, जो कार्रवाई करने की स्थिति में हैं, के ऊपर दबाव बनाने के लिए लामबंद करना।
- समुदायों के सदस्यों से समर्थन हासिल करना तथा किसी विशेष कार्यक्रम के दृष्टिकोणों तथा सेवाओं के कार्यान्वयन के लिए मांग का सृजन करना।

पक्ष–समर्थन के उद्देश्य हैं:

- जागरूकता फैलाने और नीति के समुचित कार्यान्वयन के लिए पक्ष–समर्थन की आवश्यकता सभी स्तरों, राष्ट्रीय, राज्य, जिला तथा स्थानीय समुदाय स्तर पर होती है।
- पक्ष–समर्थन गतिविधियां विभिन्न प्रकार की हो सकती हैं तथा इनमें व्यक्तियों की आपस में बातचीत, बैठक, कार्यशाला, मीडिया अभियान, जनता के संवाद शामिल हो सकते हैं।

पक्ष–समर्थन की आवश्यकता एवं महत्व

पक्ष–समर्थन काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह निम्नलिखित को प्रभावित कर सकता है:

- सरकार द्वारा नीतियों एवं विधानों का निर्माण।
- व्यापारिक तथा अन्य संगठनों द्वारा अपनी गतिविधियों के प्रभाव पर विचार।
- व्यक्तियों, समूहों और समुदायों द्वारा उनके हित के लिए समझदारीपूर्ण विकल्प तैयार करना।
- व्यक्तियों और समुदायों द्वारा अपने हितों के संवर्धन के लिए पहल का समर्थन करना।
- इसका उपयोग किसी विशेष सेवा में समस्याओं और अंतरों को उजागर करने के लिए किया जा सकता है।

अच्छे पक्ष–समर्थक के गुण

- संबंधित क्षेत्र/मुद्दे के बारे में पर्याप्त जानकारी।
- अभियान की प्रणाली तथा सामाजिक–सांस्कृतिक पर्यावरण के बारे में जानकारी।
- लक्षित श्रोताओं की प्रकृति एवं आवश्यकता की समझ।
- सहजतापूर्वक संबंध बनाना तथा इसे सदैव बनाए रखना।
- जो दूसरे व्यक्ति कहें उसे अच्छे से सुनना, जिसे 'सक्रिय श्रवण' कहा जाता है।
- लक्षित श्रोताओं को चर्चा में भाग लेने के लिए प्रेरित करना।
- प्रश्नों का सावधानीपूर्वक चयन करें ताकि लक्षित समूह को लज्जित न होना पड़े।
- अपनी बात स्पष्टता और विश्वास के साथ कहें।
- अपनी बात जोर देकर कहें, परंतु विनम्र रहें।
- कभी भी आक्रामक न बनें।
- अलोचनात्मक न बनें।

प्रभावशाली पक्ष–समर्थक कैसे बनें

क्या करें	क्या न करें
✓ डांम आंखे मिला कर बात करें। ✓ बातचीत की बिंदुओं के साथ तैयार रहें। ✓ संदेश से न भटकें। ✓ सही कपड़े पहनें। ✓ जो आप जानते हैं, उस पर कायम रहें।	× चीजों/बातों को व्यक्तिगत बनाना। × चिल्लाना अथवा तेजी से बाहर जाना। × बातों को बढ़ा–चढ़ा कर बताना। × समझौता करना।

पक्ष–समर्थन अभियान की योजना बनाने के चरण

- ➢ पक्ष–समर्थन गतिशील एवं बहुआयामी प्रकृति की प्रक्रिया है।
- ➢ पक्ष–समर्थन अभियान मार्गदर्शक का काम करता है जिसका उपयोग जागरूकता सृजन के लिए किया जा सकता है।

क. पक्ष–समर्थन मुद्दे की पहचान करना

मुद्दे की पहचान निम्नलिखित तकनीकों का प्रयोग करके की जा सकती है:

- ➢ **एस डब्ल्यु ओ टी विश्लेषण:** आवश्यक परिवर्तन लाने के लिए एस डब्ल्यु ओ टी के अंतर्गत समुदाय में मौजूद शक्तियां (एस), कमज़ोरियां (डब्ल्यु), अवसरों (ओ) तथा

खतरों (टी) का विश्लेषण करना शामिल है।

- **फोर्स फील्ड विश्लेषणः** यह परिवर्तन का समर्थन और विरोध करने वाली ताकतों का विश्लेषण करने में सहायता करती है तथा निर्णय के पीछे की तर्कशक्ति को बताने में आपकी सहायता करती है।
- **प्रोब्लम ट्री विश्लेषणः** इसमें प्रमुख समस्याओं, उनके कारणों और प्रभाव के साथ, स्पष्ट एवं संचालन योग्य लक्ष्यों की पहचान करने के लिए पक्ष–समर्थकों का समर्थन और उन्हें पाने के लिए रणनीति का मानचित्रण शामिल है।
- **टी ओ डब्ल्यु एस विश्लेषणः** यह एसडब्ल्युओटी विश्लेषण के जैसा ही है, परंतु एसडब्ल्युओटी विश्लेषण के विपरीत टीओडब्ल्युएस विश्लेषण की शुरुआत पहले अवसरों एवं खतरों की पहचान से होती है और उसके बाद शक्तियों एवं कमजोरियों की पहचान की जाती है और अंत में विश्लेषण तथा व्यवसाय विकास की रणनीतिक स्थिति एवं निर्देशों का निर्धारण किया जाता है।

ख. सूचना एकत्र करना/परिस्थिति का विश्लेषण करना

किसी भी कार्यक्रम अथवा पक्ष–समर्थन कार्य योजना का आधार परिस्थिति का विश्लेषण होता है। यह समस्या की मौजूदगी, सघनता, सबसे ज्यादा प्रभावित समूह, जोखिम आदि के संदर्भ में समस्या के समाधान की आवश्यकता का विस्तृत विश्लेषण प्रदान करता है। परिस्थितिजन्य विश्लेषण के उद्देश्य से डाटा निम्नलिखित स्रोतों से प्राप्त किया जा सकता है।

- समुदाय के साथ बातचीत से।
- अखबारों, प्रेस विज्ञप्तियों आदि से संगत सूचना पढ़ने से।
- नीतिगत दस्तावेजों से, उदाहरण के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति, राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति आदि india.gov.in/mygovernment/documents/policy पर देखा जा सकता है।
- गैर सरकारी संगठनों तथा अनुसंधान संगठनों द्वारा किए गए जानकारी, मनोवृत्ति तथा व्यवहार सर्वेक्षण से।
- परामर्शी रिपोर्टों से जिसे मंत्रालय की वेबसाइट पर देखा जा सकता है।
- एनएसएसओ, डीएलएचएस जैसे जनसांख्यिकीय तथा परिवार सर्वेक्षण डाटा से।

ग. लक्ष्य एवं उद्देश्य निर्धारित करना

प्रत्येक पक्ष–समर्थन अभियान का प्रमुख उद्देश्य परिवर्तन लाना है और यह परिवर्तन माप योग्य होना चाहिए।

- उद्देश्यों में यह स्पष्ट होना चाहिए कि:
  - क्या किया जाना है?
  - इसे कौन करेगा?
  - कब करेगा?

उद्देश्य ऐसे होने चाहिए
एस – विशिष्ट
एम – मापने योग्य
ए – प्राप्य
आर – वास्तविक
टी – समयबद्ध
+
सी – चुनौतीपूर्ण

घ. लक्ष्यों, प्रभावों और संसाधनों की पहचान करना

लक्षित श्रोता वे लोग हो सकते हैं जिनके पास परिवर्तन लाने हेतु निर्णय लेने की शक्ति है।

पक्ष–समर्थन अभियान के उद्देश्य से अपेक्षित संसाधनों में निम्न संसाधन शामिल हो सकते हैं:

- निधियां (बदले में दिए गए अंशदानों सहित) और खर्च बराबर
- पहले से ही मौजूद लोग (स्टाफ एवं स्वयंसेवक, दोनों) तथा उनके कौशल
- वे लोग, आप जिनके उपलब्ध रहने की अपेक्षा करते हैं
- संपर्क (उदाहरण के लिए, मीडिया संसाधनों के साथ)
- सुविधाएं (उदाहरण के लिए, परिवहन, कंप्यूटर तथा सभा घरों तक पहुंच)
- सूचना अभिलेखों तथा पुस्तकालयों तक पहुंच

ङ. संदेश तैयार करना

- पक्ष–समर्थन के लिए तैयार किए गए संदेशों के मुख्यतः दो बुनियादी घटक होते हैं: जो सही है उसके लिए एक अपील तथा श्रोताओं के के हित के लिए अपील।

- संदेशों को विभिन्न मंचों यथा इलैक्ट्रॉनिक मीडिया, प्रिंट मीडिया, नाटक, नुक्कड़ नाटकों, प्रचार अभियानों, जागरूकता अभियानों, प्रदर्शनियों, सामूहिक बैठकों, प्रदर्शनों, फील्ड कैंपों, भूमिका अभिनय आदि के माध्यम से प्रसारित किया जा सकता है।

च. समर्थन तैयार करना तथा भागीदारों के साथ काम करना

- समर्थन तैयार करने के लिए व्यक्तियों अथवा संगठनों द्वारा भागीदारी में काम करना शामिल है। क्योंकि भागीदार अपने सामूहिक संसाधनों को जोड़ते हुए तथा एक दूसरे के प्रयासों की सराहना करते हुए एक दूसरे को मजबूत बनाते हैं।
- अच्छी योजना तथा अच्छा संचार, भागीदारी की सफलता सुनिश्चित करने में सहायता करते हैं।

छ. वास्तविक तथा प्रभावी कार्यान्वयन/कार्य योजना बनाना

एक कार्य योजना तैयार करने के लिए निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देना आवश्यक है:

- लक्षित श्रोता कौन हैं?
- गतिविधि किस प्रकार की है?
- कौन से संसाधन आवश्यक हैं?
- गतिविधि का प्रभारी कौन होगा?
- प्रत्येक पक्ष–समर्थन गतिविधि के लिए समय–सीमा क्या है?

ज. निरीक्षण एवं मूल्यांकन

- निरीक्षण का उद्देश्य पक्ष समर्थन अभियान के दौरान प्रत्येक गतिविधि पर नजर बनाए रखना है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि अभियान की गतिविधियां ठीक वैसे ही चल रही हैं जैसी योजना बनाई गई थी ।
- मूल्यांकन इस बात का आकलन करता है कि क्या पक्ष–समर्थन अभियान प्रगति में प्रभावी ढंग से योगदान कर पाया या नहीं?

मीडिया की भूमिका

- मीडिया को चैनल्स कहा जाता है। चैनल्स में अखबार, पत्रिकाएं, रेडियो या टेलीविजन शामिल हैं। इनका इस्तेमाल लोगों को सूचना प्रसारित करने के लिए किया जाता है।
- पिछले वर्षों में आम लोगों के जीवन में मीडिया स्रोतों के गहन प्रवेश ने मीडिया को लामबंदी, पक्ष–समर्थन तथा एसबीसीसी का एक शक्तिशाली साधन बना दिया है।

मीडिया के कार्य

मुद्दे की पहचान करना।
- सामाजिक और राष्ट्रीय सरोकार के मुद्दे को प्रकाश में लाना
- लोगों का ध्यान आकर्षित करना
- लोगों के मनोभावों को प्रतिबिंबित करना

→

लोक नीति के दृष्टिकोण से समस्याओं का ढांचा तैयार करना।
- मुद्दे को सुर्खियों में रखना
- प्रतिकूल कारणों पर फोकस करना

→

सामाजिक एवं सार्वजनिक पहल को सुगम बनाना।
- व्यक्तियों को सामाजिक राजनैतिक घटकों को परिवर्तित करने के प्रयासों में सहभागिता प्रदान करने में समर्थ बनाने के लिए जानकारी और कौशल प्रदान करना।

➢ मीडिया की अन्य भूमिकाओं में निम्न शामिल हो सकते हैं:
- नीतियों पर चर्चा को सुविधानक बनाना।
- अभियान को शुरु करना।
- सामाजिक विकास कार्यक्रमों तथा सामाजिक एवं आर्थिक विकास पर नीतिगत चर्चाओं के प्रहरी के तौर पर काम करना।
- आम नागरिकों को रिपोर्टिंग में शामिल करना।
- सामाजिक कारणों पर काम कर रहे लोगों को मीडिया में स्थान देकर तथा उन्हें मीडिया पुरस्कारों के साथ सम्मानित करते हुए प्रेरित करना।

मीडिया मंच

मीडिया बहुत सारे मंच उपलब्ध कराता है जिनमें से किसी एक मंच का चुनाव सामुदायिक लामबंदी, पक्ष–समर्थन, एसबीसीसी के उद्देश्य से लोगों को प्रभावित करने के लिए किया जा सकता है।

तथापि, सबसे उपयुक्त मंच चुनने के उद्देश्य से निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार किया जा सकता है:

➢ संदेश की प्रकृति क्या है?

➢ लक्षित श्रोता कौन है?

➢ क्या मीडिया मंच उपयुक्त तथा लक्षित श्रोता की पहुंच में है?

➢ मीडिया के साथ कार्य करने में कौशल और अनुभव का स्तर क्या है?

अक्सर किसी एक मुद्दे के संवर्धन के लिए मीडिया मंचों के समूहों का प्रयोग किया जाता है। इसे 'मीडिया मिक्स' कहा जाता है।

मीडिया मंच और उनकी उपयोगिता

इलैक्ट्रॉनिक मीडिया	फिल्म, लघु फिल्म, वृत्तचित्र, वीडियो टेप, रेडियो, ऑडियो टेप कार्यक्रम, मोबाइल संदेश, एसएमएस, टीवी विज्ञापन, स्लाइड्स आदि	➢ सूचना प्रदान करता है ➢ लोगों को कार्यों के बारे में याद दिलाता है
प्रिंट मीडिया	पुस्तकें, पुस्तिकाएं, फोल्डर्स, पत्रक, हैंड–आउट, फ्लिप बुक, फ्लैनल ग्राफ, फ्लैश कार्ड्स, चार्ट्स, पत्र, विज्ञापन, प्रेस विज्ञप्तियां, होर्डिंग्स, पत्रिकाएं, जर्नल, न्यूजलेटर	➢ सूचना प्रदान करता है
लोक और पारंपरिक मीडिया	गाने, नृत्य, नाटक, कीर्तन/भजन, कठपुतली का प्रदर्शन, नगाड़ा, दीवार पर लिखना आदि	➢ रुचि जगाना है तथा समझ को सुगम बनाता है
वैकल्पिक मीडिया	भूमिका अभिनय, नुक्कड़ नाटक, नौटंकी, स्ट्रीट प्ले आदि	➢ सूचना प्रदान करता है ➢ व्यवहार परिवर्तन के लिए रोल मॉडल पेश करता है ➢ सामुदायिक सहभागिता के लिए अवसर प्रदान करता है
मल्टी–मीडिया अभियान	प्रचार अभियान, जागरूकता अभियान, प्रदर्शनियां आदि	➢ सूचना प्रदान करता है
सामूहिक संचार	समूह बैठकें, प्रदर्शन, फील्ड शिविर, सार्वजनिक भाषण	➢ सूचना प्रदान करता है ➢ समस्याओं को सुलझाने हेतु योजना बनाने के लिए अवसर प्रदान करता है

मीडिया का प्रयोग करते हुए पक्ष–समर्थन का सुदृढ़ीकरण

➢ सामाजिक मुद्दे के पक्ष–समर्थन के लिए टीवी चैनल, प्रिंट मीडिया, ऑडियो एवं वीडियो चैनलों तथा इंटरनेट, मैगजीनों/जर्नलों को एक साथ लाकर एक "मीडिया गठबंधन" बनाना।

➢ मीडिया अभियान को संपादकीय नीति का एक अभिन्न अंग बनाना। इसके अतिरिक्त

संवाददाताओं को आंतरिक बैठकों में नियमित तौर पर महिलाओं की स्थिति, एचआईवी/एड्स, नशाखोरी आदि जैसे सामाजिक मुद्दों के प्रति संवेदनशील बनाना।

- अध्ययन के अंतर्गत समस्या का स्थितिजन्य विश्लेषण प्रदान करने के लिए गश्त(बीट) (जैसे कि स्वास्थ्य और प्रदूषण गश्त (बीट)) तैयार करना।
- प्रिंट मीडिया, टीवी और रेडियो (विशेषकर शहरों में स्थित एफएम रेडियो) में 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ', 'बेल बजाओ', 'जागो ग्राहक जागो', 'पल्स पोलियो' आदि जैसे कार्यक्रमों की आवशयकता की स्थिति, जागरूकता, उपलब्धता, पहुंच, सेवा वितरण की गुणवत्ता तथा सामुदायिक सहभागिता पर अद्यतन सूचना के साथ एक साप्ताहिक स्तंभ शुरु करना।
- बेहतर प्रभाव और कवरेज हेतु मुद्दे को उजागर करने के लिए ब्रांड एंबेसडरों का उपयोग करना।

आई सी टी आधारित प्रशिक्षण के माधयम से भी पक्ष समथर्न अभियानों का सुदृढ़ीकरण किया जा सकता है, यह पारंपरिक तथा नए मीडिया के प्रयोग से किया जा सकता है। इसके बारे में विस्तृत जानकारी नीचे चित्र में दी गई है।

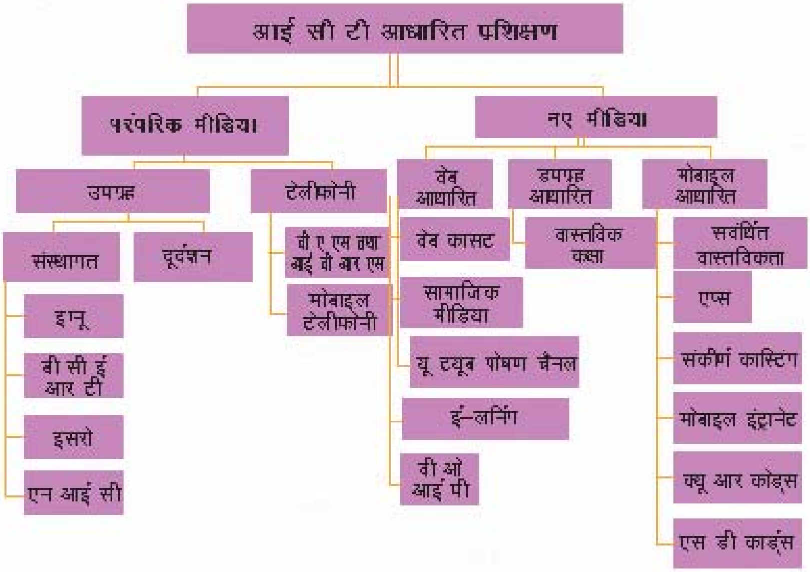

प्रशिक्षक शामिल किए गए विषयों, संबंधित गतिविधियों और अनुलग्नकों के लिए प्रशिक्षण माड्यूल में छठा दिन सत्र 1, 2 और 3 का संदर्भ ले सकते हैं।

टिप्पणियां

टिप्पणियां

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
अल्पसंख्यक कार्यों का मंत्रालय
11 वीं मंजिल, पर्यावरण भवन
सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोदी रोड
नई दिल्ली 110016

राष्ट्रीय जन सहयोग
एवं बाल विकास संस्थान (निपसिड)
5, सीरी इंस्टीटयूशनल एरिया, हौज खास
नई दिल्ली–110016

प्रारूपण एवं मुद्रण फाउन्टेनहैड सोल्यूशन प्रा. लि.